प्राक्कथन

युग परिवर्तन के साथ युग की मान्यतायें बदलती है, नई परिभाषाएँ बनती है, और नये आदर्श प्रस्तुत किये जाते है। जन-जीवन का बाह्य और अन्तर दशाओं में, उसके जीवन दर्शन में, कार्य प्रणाली में तथा परिणाम में भी परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन एक प्रकार का निखार है, गति का चिन्ह है, प्रगति का पग है। अत: जब परिवर्तन प्रस्तुत होता है, तब विकासशील शक्तियाँ उसका स्वागत करती है और रूढ़िवादी शक्तियाँ जो विकास को (अपना) विनाश मानती है, उसका विरोध करती है।

साहित्य से धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा नैतिक विचारों एवं भावों, पारिवारिक सम्बन्धों तथा देशी-विदेशी संस्थाओं का इतिहास सहजता से प्राप्त हो जाता है। संस्कृति को गंध और सभ्यता को पुष्प कहा जाता है। एक है आत्मा और दूसरी है शरीर। व्यक्ति परिवार, समुदाय, समाज तथा देश की संस्कृति का पता प्राय: सभ्यता से ही लगता है। रहन-सहन, बोल-चाल, खान-पान, आचार-व्यवहार में संस्कृति झलकती रहती है। काव्य में इन सभी का वर्णन होता है, अतएव वह सांस्कृतिकोत्थान का द्योतक सहजत: हो जाता है। काव्य का माध्यम शब्द (भाषा) होता है। कवि संप्रेष्य भाव, विचार, अनुभव, संवेदन एवं संस्कार के अनुरूप शब्दों का अनुसंधान या चयन करता है।

जिस समाज या जाति में जिन विचारों, भावों, व्यवहारों, संस्थाओं तथा पदार्थों का अस्तित्व नहीं होता, उस समाज की भाषा में उनसे सम्बद्ध शब्दावली का अभाव होता है। भाषा संस्कृति और साहित्य का वाहन हैं। शब्द का भावाभाव सम्बन्धित प्रवृत्ति, संस्कार, विचार, भाव अनुभव एवं वस्तु आदि के भाव-अभाव, अस्तित्व-अनस्तित्व का सूचक होता है। भारतीय संस्कृति का मूल और उसका सच्चा स्वरूप हमें सूरदास के काव्य में ही प्राप्त होता है। 'संस्कृति ही वह आधार है, जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कला, नैतिकता, प्रथाएँ एवं परम्पराएँ सीखता है। संस्कृति एक सामाजिक विरासत है।' भारत में सांस्कृतिक परिवर्तनों की गति द्रुत हुई है। परम्परा निबद्ध भारतीय दृष्टि को नवीन वैचारिक जगत् का परिवेश प्राप्त हुआ है।

देश में शिक्षा के प्रसार प्रचार के बाद नवीन संस्कृति के ताने-बाने बुने जाने लगे। और भारतीय मनीषियों के विचारों को समझने का प्रयास हुआ।

साहित्य का जीवन से अटूट सम्बन्ध होता है एवं साहित्य समाज का दर्पण होता है। दर्पण का काम यह होता है कि वह जैसे का तैसा, जो जैसा है वह वैसा ही दिखाता है। समाज मे जो घट रहा होता है उसको वैसा ही साहित्य धारण कर लेता है। कालावधि के वाद पाठक या स्रोता जो भी हो उसको बीते समय का यथावत चित्र प्रस्तुत कर देती है। परिवर्तन सृष्टि का क्रम। जिस प्रकार वृक्षों से पीले पत्ते गिर जाते है तथा कुछ समय बाद उन पर पुन: हरे पत्ते आ जाते है ठीक उसी प्रकार आत्मा भी अपने पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है।

समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, रीति-रिवाज, अन-बन, औद्यौगिकीकरण, महानगरीय वातावरण, ने आज जीवन में कुण्ठा और निराशा उत्पन्न की है। आज के वातावरण में भाई-भाई के साथ सुख दुख में खड़ा नहीं होता। प्रेम भी स्वार्थ की चादर ओढ़े हुए होता है। पत्नी को घर के सुख से ज्यादा पति की आय पसन्द आती है। बच्चों के लिए माँ-बाप का प्यार केवल दौलत का व्यापार बनता नजर आ रहा है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी मानव अगर समाज के प्रति सजग नजर आता है। मनुष्य जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक व्यवस्था को स्थापित व विकसित किया जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत नियम, नीतियाँ, आदर्श, धारणाएँ आदि सभ्यता और संस्कृति का रूप धारण कर लेती है। साहित्य जीवन सापेक्ष है। वर्तमान जीवन के आधुनिक परिवेश की मानसिकता आज के साहित्य में अभिव्यक्त हो रही है। साहित्य की सभी विधाओं में यही आधुनिकता बोध अक्षरश: उभारा जा रहा है। विशेषत: कथा साहित्य सम्पूर्ण जीवन की समीक्षा करता जान पड़ता है। परिस्थितियाँ पुरुष की तुलना में स्त्री को अधिक प्रभावित करती है। शायद इसीलिए स्त्री विमर्श की आवश्कता महसूस हुई है।

नारी समाज की जो वास्तविक स्थिति जिस समय होती है उसी का प्रतिफलन तत्कालीन मनुष्य की चेतना पर पड़ता है। इसलिए वर्ग-विभक्त समाज में नारी पुरुष

बीच जो भेदभाव का दोहरा मानदण्ड स्थापित हुआ है, वह कई युगों से परिवार के अन्दर, समाज के अन्दर, मनुष्य की विचारधारा, अनुभूति और सभ्यता के विभिन्न चरणों से गुजरकर स्थापित हुआ है। नारी चेतना, स्त्री अस्मिता का विकास इन्हीं प्रश्नों में छुपा हुआ है।

वास्तव में नारी समाज का आधा हिस्सा और समाज की उन्नति-अवनति का मापदंड है। वह साहित्य, संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। वह उच्च मानवीय गुणों और आदर्शों का अजस्र स्रोत है। वह पुरुष की प्रेरणा, साथी, मार्गदर्शक, संरक्षक है। उसके बिना सृष्टि, सभ्यता, संस्कृति और पुरुष के जीवन में वह स्थान नहीं दिया जाता। जिसकी वह हकदार है। पुरुष प्रधान सनातनी समाज व्यवस्था नारी को सदैव उसके अधिकारों से वंचित रखकर उसे मात्र भोग का साधन बनाती है। आधुनिक काल की स्त्री को भोगवादी वस्तु बनना स्वीकार नहीं है।

इसलिए मैंने आज के परिवेश को ध्यान रखते हुए अपने शोध का विषय अनामिका के काव्य में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन चयन किया। इस शोध प्रबन्ध को मैंने सात अध्यायों में बाटा है।

प्रथम अध्याय : स्त्री विमर्श अर्थ एवं स्वरूप नाम से है। इसमें मैंने स्त्री विमर्श का अर्थ एवं परिभाषा, स्त्री विमर्श का इतिहास, स्त्री विमर्श की भारतीय अवधारणा, स्त्री विमर्श की पाश्चात्य अवधारणा, स्त्री विमर्श की पाश्चात्य एवं भारतीय अवधारणा में अन्तर को दर्शाया है।

द्वितीय अध्याय : हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श नाम से है। इसमें मैंने हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श का स्वरूप, वैदिक काल एवं आदिकाल में स्त्री विमर्श, भक्तिकाल में स्त्री विमर्श, रीतिकाल में स्त्री विमर्श, आधुनिक काल में स्त्री विमर्श, इक्कीसवीं सदी में स्त्री विमर्श के अन्तर्गत स्त्री की प्राचीन स्थिति से अद्यतन स्थिति का वर्णन किया है। अन्त हिन्दी काव्य में स्त्री विमर्श की परम्परा में अनामिका का स्थान को समझने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय : अनामिका का व्यक्तित्व एवं कृतित्व नाम से है। इसमें मैंने अनामिका का जन्म, माता-पिता पूर्वज आदि, शिक्षा, विवाह, संतति, अनामिका का गद्य साहित्य, अनामिका का पद्य साहित्य, अनामिका का अन्य साहित्य का अवलोकन प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय : अनामिका के काव्य के वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श नाम से है इसमें मैंने अनामिका के काव्य में निहित अस्मिताबोध, यौन स्वातंत्र्य स्त्री, स्त्री मुक्ति, भूमण्डीकरण का प्रभाव, आशावादिता, वैयक्तिक प्रेम, पारिवारिक संबंध आदि के बारे में अध्ययन प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय : अनामिका के काव्य में स्त्री का व्यक्तिगत जीवन नाम से है इसमें मैंने अनामिका के काव्य में निहित नारी जीवन के विविध पहलूओं, प्रथम स्राव, गर्भिणी स्त्री, प्रसवकालीन स्त्री, अन्तिम स्राव आदि को समझने का प्रयास किया है।

षष्ठ अध्याय : अनामिका के काव्य की सृजन समीक्षा नाम से है। इसमें मैंने अनामिका के काव्य में निहित संवेदनात्म्क चित्रण, समस्यात्मक चित्रण, परिस्थिति चित्रण, यथार्थ चित्रण, अभिव्यक्ति पक्ष को प्रस्तुत किया है।

अन्त में उपंसहार नाम से है। इसमें मैंने सम्पूर्ण शोध का सारांश प्रस्तुत किया है।

राजेश कुमार खज्जा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
बड़ौदा गुजरात